



2026:AHC:23412-DB

ए.एफ.आर

इलाहाबाद उच्च न्यायालय
जेल अपील संख्या - 192 वर्ष 2022

धर्मेन्द्र उर्फ चंद्र प्रकाश

...अपीलकर्तागण

बनाम

उत्तर प्रदेश राज्य

...प्रतिवादीगण

अपीलकर्तागण के अधिवक्ता: जेल से, हरीश चंद्र तिवारी
प्रतिवादी के अधिवक्ता: ए.जी.ए.

न्यायालय संख्या - 48

माननीय न्यायमूर्ति श्री चंद्र धारी सिंह,
माननीय न्यायमूर्ति श्री देवेन्द्र सिंह-1,

माननीय न्यायमूर्ति श्री चंद्र धारी सिंह द्वारा प्रदत्त

1. यह आपराधिक अपील अपीलकर्ता धर्मेन्द्र उर्फ चंद्र प्रकाश द्वारा अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश, न्यायालय संख्या 4, झांसी द्वारा सत्र परीक्षण संख्या 336/2014 में धारा 302 आईपीसी के तहत पारित दिनांक 08.06.2022 के निर्णय और आदेश के विरुद्ध दायर की गई है, जिसमें माननीय न्यायाधीश ने अपीलकर्ता को धारा 302 आईपीसी के तहत आजीवन कारावास और 20,000 रुपये के जुर्माने की सजा सुनाई है और जुर्माने का भुगतान न करने की स्थिति में उसे एक वर्ष के अतिरिक्त कारावास की सजा भुगतने का निर्देश दिया गया है।

मामले के संक्षिप्त तथ्य

2. वर्तमान आपराधिक अपील के आधार पर संक्षेप में कहें तो, प्रथम शिकायतकर्ता रोहित कुमार, पुत्र कैलाश नारायण द्वारा 23.07.2014 को रात 1:30 बजे पुलिस स्टेशन उल्डन में एक लिखित आख्या सौंपी गई थी, जिसमें उन्होंने बताया कि 22.07.2017 को लगभग रात 8:30 बजे उनके चचेरे भाई धर्मेन्द्र (जिसे आगे आरोपी-अपीलकर्ता कहा गया है), पुत्र विश्वनाथ श्रीवास, आरोपी झांसी जिले के तहरौली पुलिस स्टेशन के ढाबारी गांव का

अस्वीकरण:- अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



स्थायी निवासी हैं और वर्तमान में अपने नाना के साथ झांसी जिले के उल्दन पुलिस स्टेशन के राजपुरा गांव में रह रहा है। चूंकि आरोपी नशीले पदार्थों का सेवन करता था, इसलिए पति-पत्नी के बीच झगड़े होते रहते थे। घर के अंदर से चीख-पुकार सुनकर जब वह जुगुल किशोर और ललता प्रसाद के साथ आरोपी के घर के अंदर गया, तो उन्होंने आरोपी को अपनी पत्नी श्रीमती नीतू देवी के चेहरे और गर्दन पर हंसिया से वार करते देखा। एफआईआर में आगे बताया गया है कि गवाहों के आने पर आरोपी खून से सनी हंसिया और खून से सने कपड़ों में भाग गया, जो उसने घटना के समय पहने हुए थे। उपरोक्त घटना की सूचना मृतक के पिता को दी गई, जो मौके पर पहुंचे। गंभीर चोटों के कारण श्रीमती नीतू देवी (जिन्हें आगे मृतक कहा गया है) की मृत्यु हो गई।

3. उपरोक्त आख्या के आधार पर, झांसी जिले के उल्दन पुलिस स्टेशन में धारा 302 आईपीसी के तहत मामला संख्या 80/2014 में मामला दर्ज किया गया।

4. प्रथम सूचना आख्या दर्ज होने के बाद, कानून ने कार्रवाई शुरू की और पीडब्ल्यू 7, निरीक्षक सत्येंद्र सिंह ने मामले की जांच शुरू की। आवश्यक औपचारिकताएं पूरी करने के बाद, उन्होंने आरोपी के खिलाफ धारा 302 आईपीसी के तहत आरोप पत्र दाखिल किया। आरोपी की खून से सनी हंसिया और खून से सने कपड़े भी आगरा की विधि विज्ञान प्रयोगशाला में भेजे गए।

5. चूंकि यह मामला विशेष रूप से सत्र न्यायालय द्वारा विचारणीय था, इसलिए माननीय मजिस्ट्रेट ने मामले को सत्र न्यायालय को सौंप दिया, जहां मामला एसटी संख्या 336/2014 के रूप में पंजीकृत किया गया। माननीय अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश/विशेष न्यायाधीश (एससी एवं एसटी अधिनियम), झांसी ने दिनांक 15.09.2015 के आदेश द्वारा आरोपी-अपीलकर्ता के खिलाफ धारा 302 आईपीसी के तहत आरोप तय किए, जिसे उसे पढ़कर समझाया गया।

6. अपीलकर्ता के अपराध को पूरी तरह से सिद्ध करने के लिए, अभियोजन पक्ष ने सात गवाहों की जांच की है, जिनमें से पीडब्ल्यू-1, रोहित कुमार मामले का पहला सूचनादाता है, पीडब्ल्यू-2, जुगुल किशोर, पीडब्ल्यू-3, ललता प्रसाद तथ्यात्मक गवाह हैं, शेष गवाह औपचारिक हैं।

7. पीडब्ल्यू-1, रोहित कुमार मामले का पहला सूचनादाता है। अपने मुख्य बयान में, उसने एफआईआर में दिए गए विवरणों को दोहराया है। उसने आगे गवाही में कहा गया कि 23.07.2014 को, आरोपी की ओर से इशारा करने पर, जांच अधिकारी ने हमले का हथियार, अर्थात् खून से सना हुआ हंसिया और आरोपी के खून से सने कपड़े बरामद किए, जिन पर उसने अपने हस्ताक्षर किए थे, जिन्हें उसने प्रदर्श का-2 और का-3 के रूप में प्रमाणित किया। वह पंचायतनामा का गवाह भी था। उसने यह भी बताया कि आरोपी-अपीलकर्ता उसका चचेरा भाई है और उसने गांव के कई लोगों के साथ आरोपी को मृतक की हत्या करते हुए देखा था।

8. पीडब्ल्यू -2, जुगुल किशोर ने अपनी मुख्य गवाही में बयान दिया है कि वह अपीलकर्ता को अच्छी तरह जानता है। वह उसके पड़ोस में किराए के मकान में रहता था। आरोपी-अपीलकर्ता और मृतक के बीच आरोपी के नशे में होने को लेकर अक्सर झगड़ा होता था। 22.07.2014 को लगभग 8:00-8:30 बजे, अपीलकर्ता के घर से शोर सुनकर जब वह रोहित और ललता प्रसाद के साथ घर के अंदर गया, तो उन्होंने आरोपी को अपनी पत्नी (मृतक) के चेहरे पर हंसिया से वार करते देखा। उन्होंने अपीलकर्ता को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन हंसिया से लैस होने के कारण कोई भी उसके पास जाने की हिम्मत नहीं कर सका और आरोपी भागने में सफल हो गया। आरोपी की पत्नी की मौके पर ही मौत हो गई। उसने आगे बयान दिया कि वह भी पंचायतनामा का गवाह था।

अस्वीकरण:- अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



9. पीडब्ल्यू 3, ललता प्रसाद ने अपने मुख्य बयान में बयान दिया कि घटना वाले दिन आरोपी अपनी पत्नी और बच्चों के साथ अपने नाना के खाली घर में रह रहा था। आरोपी और मृतक के बीच हमेशा कहा-सुनी होती रहती थी क्योंकि अपीलकर्ता नशीले पदार्थों का सेवन करता था। 22.07.2014 को रात 8:00-8:30 बजे वह सीता राम की दुकान पर खड़ा था। मृतक की चीखें सुनकर जब वह जुगुल, रोहित और आसपास के अन्य लोगों के साथ अपीलकर्ता के घर गया, तो उसने अपीलकर्ता को हंसिया से मृतक के चेहरे और गर्दन पर वार करते देखा। उन्हें देखकर आरोपी भाग गया। उसने उजाले में आरोपी को अपनी पत्नी पर हमला करते देखा। चूंकि आरोपी धारदार हथियार से लैस था, इसलिए वह उसके पास जाने की हिम्मत नहीं जुटा सका। उसने आगे बयान दिया कि वह भी पंचायतनामा का गवाह था।

10. पीडब्ल्यू 4, डॉ. राम नरेश ने अपने मुख्य बयान में कहा है कि 23.07.2014 को दोपहर लगभग 3:00 बजे उन्होंने मृतक के शव का शव परीक्षण किया और उसमें निम्नलिखित मृत्यु-पूर्व चोटें पाई गईं:

1. नाक और चेहरे के बाईं ओर, नाक की नोक से 2.5 सेमी नीचे, बाईं आंख की निचली पलक से 2 सेमी नीचे, 8 सेमी x 1 सेमी x हड्डी तक गहरा चीरा लगा हुआ था, जिसके किनारे साफ कटे हुए थे। जमा हुआ रक्त मौजूद था और हड्डी में अस्थिभंग था।

2. गर्दन के बाईं ओर, अवटु उपास्थि के ठीक ऊपर, 12 सेमी x 5 सेमी x हड्डी तक गहरा चीरा लगा हुआ था, जो तिरछे रूप से बाएं कान के लोलकी तक जाता था। गर्दन के बाईं ओर के नरम ऊतक, श्वासनली, अन्नप्रणाली और रक्त वाहिकाएं क्षतिग्रस्त थीं। जमा हुआ रक्त मौजूद था।

11. चिकित्सक की राय में, मृतक की मृत्यु का कारण मृत्यु-पूर्व चोटों के परिणामस्वरूप सदमा और रक्तस्राव था।

12. पीडब्ल्यू 5, घनराम चौधरी ने अपने मुख्य बयान में गवाही दी है कि 23.07.2014 को वे पुलिस स्टेशन उल्दन में मुख्य आरक्षी के पद पर तैनात थे। उसी दिन रोहित कुमार की लिखित आख्या पर उन्होंने पुलिस स्टेशन तहरौली, जिला झांसी में अपीलकर्ता के खिलाफ आईपीसी की धारा 302 के तहत मामला संख्या 80/2014 में मूल त्वरित एफआईआर तैयार की, जिसे उन्होंने प्रदर्शक-6 के रूप में साबित किया।

13. पीडब्ल्यू-6 विजय प्रताप सिंह ने अपने मुख्य बयान में गवाही दी है कि 23.07.2014 को वे पुलिस स्टेशन उल्दन में सब-निरीक्षक के पद पर तैनात थे। उसी दिन जांच अधिकारी के निर्देशों पर उन्होंने मृतक के शव की पंचायतनामा की की। उन्होंने आवश्यक दस्तावेज भी तैयार किए, शव को बंद करके, शव परीक्षण कराने के लिए आरक्षी राजा राम और राजेश कुमार को सौंप दिया गया। उस समय, जांच अधिकारी ने सादी और खून से सनी मिट्टी एकत्र की, जिसका जाप उन्होंने तैयार किया। अपीलकर्ता के बताए अनुसार, जांच अधिकारी ने राम सहाय के खेत के अंदर स्थित झोपड़ी से खून से सनी हंसिया बरामद की, जिसका जाप उन्होंने तैयार किया। उन्होंने जांच अधिकारी के निर्देश पर आरोपी के खून से सने कपड़ों का जाप भी तैयार किया।

14. अभियोजन पक्ष के साक्ष्य समाप्त होने के बाद, आरोपी का बयान धारा 313 सीआरपीसी के तहत दर्ज किया गया, जिसमें उसने अपने विरुद्ध लगे आरोपों से इनकार किया और अपराध में झूठे फंसाए जाने का दावा करते हुए निर्दोषता का दावा किया और मुकदमे की मांग की।

15. माननीय अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश, न्यायालय संख्या 4, झांसी ने पक्षों के अधिवक्ताओं की सुनवाई करने और अभिलेखीय साक्ष्यों का आकलन, मूल्यांकन और जांच करने के बाद, आरोपी-अपीलकर्ता को उपरोक्त अनुसार दोषी ठहराया और सजा सुनाई।

अस्वीकरण:- अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



16. उपर्युक्त दोषसिद्धि और सजा के आदेश से व्यथित और असंतुष्ट होकर अपीलकर्ता ने यह अपील दायर की है।

अपीलकर्ता की ओर से तर्क

17. अपीलकर्ता-आरोपी के विद्वान अधिवक्ता ने प्रारंभ में ही यह तर्क दिया कि वे अपनी दलील को केवल धारा 302 से धारा 304 आईपीसी में सजा के रूपांतरण तक ही सीमित रखते हैं और प्रस्तुत करते हैं कि चूंकि कोई पूर्वनियोजन नहीं था और घटना आवेश में घटी थी, मृतक को लगी चोटों को देखते हुए, मामला धारा 304 आईपीसी के दायरे से बाहर नहीं जाता है।

18. अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता आगे प्रस्तुत करते हैं कि इस मामले में घटना को अंजाम देने के मकसद का आभाव है।

राज्य की ओर से तर्क

19. दूसरी ओर, राज्य का प्रतिनिधित्व कर रहे विद्वान अतिरिक्त सरकारी अधिवक्ता श्री आर.के. गुप्ता ने प्रस्तुत किया कि आरोपी ने मृतक की गर्दन और चेहरे पर हंसिया से चोट पहुंचाई, जिसके परिणामस्वरूप उसकी मृत्यु हो गई और कोई गंभीर या अचानक उकसावा नहीं था, विद्वान विचारण न्यायालय ने अभिलेख पर मौजूद संपूर्ण साक्ष्यों का मूल्यांकन करते हुए, अपीलकर्ता को धारा 302 आईपीसी के तहत दंडनीय अपराध के लिए सही ठहराया और सजा सुनाई।

विश्लेषण और निष्कर्ष

20. हमने अपीलकर्ता के लिए विद्वान न्याय मित्र श्री हरीश चंद्र तिवारी और विद्वान अतिरिक्त सरकारी अधिवक्ता को सुना।

21. एहतियात के तौर पर, हमने शव परीक्षण आख्या और अभियोजन पक्ष के गवाहों के साक्ष्य का अध्ययन किया है। शव परीक्षण आख्या और चिकित्सा अधिकारी के साक्ष्य के अवलोकन से, हमें मृतक की मृत्यु को हत्या मानने के निष्कर्ष में हस्तक्षेप करने का कोई कारण नहीं मिलता है। हमें निचली अदालत के इस निष्कर्ष में भी हस्तक्षेप करने का कोई कारण नहीं मिलता है कि अपीलकर्ता ने ही मृतक को चोटें पहुंचाई जिसके परिणामस्वरूप उसकी मृत्यु हुई।

22. इस निष्कर्ष पर पहुंचने के बाद कि अपीलकर्ता मृतक की मृत्यु के लिए उत्तरदायी है, अब हमें यह जांच करनी होगी कि क्या अपीलकर्ता द्वारा किया गया अपराध आईपीसी की धारा 302 के अंतर्गत आता है या इसे आईपीसी की धारा 304 के अंतर्गत परिवर्तित किया जा सकता है, जैसा कि अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता ने तर्क दिया है।

23. अपीलकर्ताओं के विद्वान अधिवक्ता के तर्क को बेहतर ढंग से समझने के लिए, हम इस मुद्दे पर माननीय सर्वोच्च न्यायालय के कुछ निर्णयों का उल्लेख करना चाहेंगे, जहां तक अपीलकर्ता का संबंध है।

24. **जगतार सिंह बनाम पंजाब राज्य (1983) 2 एससीसी 342** में, आरोपी ने अचानक मृतक की छाती पर चाकू से वार किया। यह चोट घातक साबित हुई। चिकित्सक ने राय दी कि सामान्य परिस्थितियों में यह चोट मृत्यु का कारण बनने के लिए पर्याप्त थी। सर्वोच्च न्यायालय ने टिप्पणी की कि झगड़ा मामूली प्रकृति का था और ऐसे मामूली झगड़े में भी अपीलकर्ता ने चाकू जैसे हथियार का इस्तेमाल किया और छाती पर वार किया।

अस्वीकरण:- अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



इन परिस्थितियों में, यह निष्कर्ष निकालना अस्वीकार्य है कि कम से कम आरोपी को इस बात का ज्ञान था कि वह ऐसी चोट पहुँचा सकता है जिससे मृत्यु हो सकती है। न्यायालय ने अपीलकर्ता की दोषसिद्धि को धारा 302 आईपीसी से बदलकर धारा 304 भाग II आईपीसी कर दिया और आरोपी को पाँच वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई।

25. **के. रामाकोटेस्वरा राव बनाम आंध्र प्रदेश राज्य, 1986 सीआर.एलजे 680** में, आरोपी और मृतक के बीच अचानक झगड़ा हुआ और मृतक ने आरोपी को गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी दी। आरोपी ने मृतक पर चाकू से वार किया। न्यायालय ने आरोपी को धारा 304 भाग-I आईपीसी के तहत दोषी ठहराया।

26. **सुरिंदर कुमार बनाम केंद्र शासित प्रदेश, चंडीगढ़ (1989)2 एससीसी 217** मामले में, माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला सुनाया कि यदि अचानक हुए झगड़े में कोई व्यक्ति आवेश में आकर अपने पास मौजूद हथियार उठा लेता है और उससे ऐसी चोटें लगती हैं जिनमें से केवल एक ही जानलेवा साबित होती है, तो उसे अपवाद का लाभ मिलेगा, बशर्ते उसने क्रूरता का कार्य न किया हो। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने यह भी कहा कि ऐसी स्थिति में लगी चोटों की संख्या निर्णायक कारक नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि घटना अचानक और अनियोजित झगड़े के कारण हुई हो और अपराधी ने क्रोध में आकर ही यह कार्य किया हो। धारा 300 के अपवाद 4 के प्रावधान पर विचार करते हुए माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने कहा:

"..... इस अपवाद का प्रयोग करने के लिए चार शर्तें पूरी होनी चाहिए, अर्थात्, (i) यह एक अचानक हुई लड़ाई थी; (ii) इसमें कोई पूर्वनियोजन नहीं था; (iii) यह कृत्य आवेश में आकर किया गया था; और (iv) हमलावर ने कोई अनुचित लाभ नहीं उठाया था या क्रूर तरीके से कार्य नहीं किया था। झगड़े का कारण प्रासंगिक नहीं है और न ही यह प्रासंगिक है कि किसने उकसाया या हमला शुरू किया। घटना के दौरान हुए घावों की संख्या निर्णायक कारक नहीं है, बल्कि महत्वपूर्ण यह है कि घटना अचानक और अनियोजित होनी चाहिए और अपराधी ने क्रोध में आकर कार्य किया होना चाहिए। बेशक, अपराधी द्वारा कोई अनुचित लाभ नहीं उठाया गया होना चाहिए या क्रूर तरीके से कार्य नहीं किया होना चाहिए। जहाँ, अचानक हुए झगड़े में, यदि कोई व्यक्ति आवेश में आकर अपने पास मौजूद हथियार उठा लेता है और चोटें पहुँचाता है, जिनमें से एक घातक साबित होती है, तो उसे इस अपवाद का लाभ मिलेगा, बशर्ते उसने क्रूरतापूर्वक कार्य न किया हो।"

27. **वी. श्रीधरन बनाम केरल राज्य, एआईआर 1992 एससी 754** में, अचानक हुए झगड़े के दौरान गुस्से में आकर उकसावे की वजह से आरोपी ने मृतक का कुछ दूर तक पीछा किया और फिर एक ही जानलेवा वार किया, यह माना गया कि पूरी घटना एक निरंतर क्रम में घटी थी। इसलिए आरोपी की सजा धारा 302 से बदलकर धारा 304 भाग-I आईपीसी के अंतर्गत कर दी गई।

28. **भेरा बनाम राजस्थान राज्य, 2000 एससीसी (क्रि) 1230** में, आरोपी और मृतक के बीच झगड़ा हुआ और झगड़े के दौरान आरोपी ने गुस्से में आकर अचानक चाकू निकाला और मृतक की छाती पर वार किया जिससे उसकी मृत्यु हो गई। सर्वोच्च न्यायालय ने अपीलकर्ता की धारा 302 आईपीसी के अंतर्गत सजा को रद्द कर दिया और उसे दोषी ठहराया। धारा 304 भाग II आईपीसी के तहत उसे 5 वर्ष कारावास की सजा सुनाई गई।

29. **मोची राजू बनाम गुजरात राज्य, जेटी 2001 (10) एससी 398** में, आरोपी अपीलकर्ता और मृतक के बीच लड़ाई शुरू हो गई और झगड़े के दौरान अपीलकर्ता ने जेब से चाकू निकालकर मृतक की छाती पर एक वार किया। सर्वोच्च न्यायालय ने अपीलकर्ता को धारा 304 भाग II के तहत अपराध के लिए दोषी ठहराते हुए उसे पांच वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई।

अस्वीकरण:- अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



30. **सुखबीर सिंह बनाम हरियाणा राज्य, (2002) 3 एससीसी 327** में, अपीलकर्ता ने मृतक के शरीर के महत्वपूर्ण अंग पर दो भाला वार किए जो सामान्य रूप से मृत्यु का कारण बनने के लिए पर्याप्त थे। उच्च न्यायालय ने माना कि अपीलकर्ता ने क्रूर और असामान्य तरीके से कार्य किया था। उच्च न्यायालय द्वारा लिए गए दृष्टिकोण को उलटते हुए, माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि आईपीसी की धारा 300 के अपवाद 4 के प्रयोजनों के लिए मृत्यु का कारण बनने वाली सभी घातक चोटों को क्रूर या असामान्य नहीं कहा जा सकता है। ऐसे मामलों में जहां घायल व्यक्ति के गिरने के बाद, जब वह असहाय स्थिति में था, अपीलकर्ता ने उसे कोई और चोट नहीं पहुंचाई, तो यह संकेत दे सकता है कि उसने क्रूर या असामान्य तरीके से कार्य नहीं किया था। न्यायालय ने टिप्पणी की:

31. **"सुखबीर सिंह बनाम हरियाणा राज्य," (2002) 3 एससीसी 327** में, अपीलकर्ता ने मृतक के शरीर के महत्वपूर्ण अंग पर दो भाले के प्रहार किए जो सामान्य रूप से मृत्यु का कारण बनने के लिए पर्याप्त थे। उच्च न्यायालय ने माना कि अपीलकर्ता ने क्रूर और असामान्य तरीके से कार्य किया था। उच्च न्यायालय द्वारा लिए गए दृष्टिकोण को उलटते हुए, इस न्यायालय ने माना कि आईपीसी की धारा 300 के अपवाद 4 के प्रयोजनों के लिए मृत्यु का कारण बनने वाली सभी घातक चोटों को क्रूर या असामान्य नहीं कहा जा सकता है। ऐसे मामलों में जहां घायल व्यक्ति के गिरने के बाद, जब वह असहाय स्थिति में था, अपीलकर्ता ने उसे कोई और चोट नहीं पहुंचाई, तो यह संकेत दे सकता है कि उसने क्रूर या असामान्य तरीके से कार्य नहीं किया था। न्यायालय ने टिप्पणी की:

"...आईपीसी की धारा 300 के अपवाद 4 का लाभ न उठाने के उद्देश्य से, मृत्यु का कारण बनने वाली सभी घातक चोटों को क्रूर या असामान्य नहीं कहा जा सकता। चोटें लगने के बाद और घायल के गिर जाने के बाद, यह नहीं दिखाया गया है कि अपीलकर्ता ने असहाय स्थिति में उसके शरीर पर कोई अन्य चोट पहुंचाई हो। यह सिद्ध हो चुका है कि अचानक हुए झगड़े और उसके बाद हुई लड़ाई में आवेश में आकर, भाले से लैस आरोपी ने अंधाधुंध चोटें पहुंचाई और इस प्रकार उसने क्रूर या असामान्य तरीके से कार्य नहीं किया।"

32. **गप्पू यादव बनाम मध्य प्रदेश राज्य (2003) 3 एससीसी 528** में, माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि आवेश में आकर भावनाओं को शांत होने का समय नहीं मिलता और कथित मामले में न्यायालय के समक्ष पक्षकार शुरू में मौखिक कहासुनी के कारण उग्र हो गए थे। घटना के पूर्वनियोजन के बिना अचानक हुए झगड़े का परिणाम होने के अलावा, कानून के अनुसार अपराधी को धारा 300 आईपीसी के अपवाद 4 का लाभ उठाने के लिए अनुचित लाभ नहीं उठाना चाहिए या क्रूर या असामान्य तरीके से कार्य नहीं करना चाहिए। न्यायालय ने कहा कि झगड़ा अचानक हुआ था या नहीं, यह प्रत्येक मामले के तथ्यों और परिस्थितियों के आधार पर तय किया जाएगा।

33. **पुलिचेरला नागराजू @ नागराजा रेड्डी बनाम आंध्र प्रदेश राज्य (2006) 11 एससीसी 444** में, माननीय न्यायालय ने कहा:

"इसलिए, न्यायालय को इरादे के महत्वपूर्ण प्रश्न का निर्णय सावधानी और सतर्कता से करना चाहिए, क्योंकि इससे यह तय होगा कि मामला धारा 302 या 304 भाग I या 304 भाग II के अंतर्गत आता है या नहीं। कई छोटी या महत्वहीन बातें - फल तोड़ना, मवेशी का भटकना, बच्चों का झगड़ा, अभद्र शब्द का उच्चारण या यहां तक कि आपत्तिजनक नजर भी, झगड़े और समूह संघर्षों का कारण बन सकती हैं, जिनका परिणाम मृत्यु हो सकता है।" ऐसे मामलों में प्रतिशोध, लोभ, ईर्ष्या या संदेह जैसे सामान्य मकसद पूरी तरह से अनुपस्थित हो

अस्वीकरण:- अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



सकते हैं। कोई इरादा नहीं हो सकता है। कोई पूर्व नियोजित योजना नहीं हो सकती है। वास्तव में, शायद अपराध भी न हो।"

34. **सुधाकर बनाम उत्तर प्रदेश राज्य, (2012)8 एससी 289** में, माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने निम्नानुसार निर्णय दिया:

"प्रकट तथ्यों के विवरण के आधार पर, ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे यह संकेत मिले कि अपीलकर्ता के मन में मृतक की मृत्यु का कारण बनने की कोई पूर्वयोजना थी। पीडब्लू 1 के बयान को ध्यान में रखते हुए कि मृतक शराब के नशे में था और जब भी वह शराब के नशे में होता था तो वह घर का सामान फेंक देता था और घर में हंगामा करता था, यह एक ऐसा कारक था जिसने अपीलकर्ता को क्रोधित कर दिया, जो एक पिता के रूप में अपने बेटे के ऐसे व्यवहार को सहन करने की स्थिति में नहीं था, जिसका शराब के नशे में किया गया दुर्व्यवहार उसके लिए पीड़ादायक था। इसलिए, परिणामों की परवाह किए बिना, यद्यपि क्रूर तरीके से नहीं, अपीलकर्ता ने एक ही प्रहार किया जिससे दुर्भाग्यवश महत्वपूर्ण अंगों को गंभीर क्षति पहुंची और मृतक की मृत्यु हो गई। ऐसी परिस्थितियों में, जैसा कि अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता ने सही तर्क दिया है, हम इस बात से आश्वस्त हैं कि अपीलकर्ता के खिलाफ लगाए गए और सिद्ध पाए गए अपराध को आईपीसी की धारा 304 के प्रथम भाग के अंतर्गत लाया जा सकता है। तदनुसार, अपीलकर्ता की दोषसिद्धि की पुष्टि करते हुए, हम इसे केवल आईपीसी की धारा 302 के स्थान पर आईपीसी की धारा 304 "भाग I" के अंतर्गत संशोधित कर रहे हैं। अपीलकर्ता पर लगाई गई सजा के संबंध में, चूंकि हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि दोषसिद्धि आईपीसी की धारा 304 "भाग I" के अंतर्गत आनी चाहिए, पहले से भुगती गई सजा को ध्यान में रखते हुए, हमें कारावास प्रमाण पत्र से पता चलता है कि अपीलकर्ता 12.07.2004 से जेल में है और उसकी आयु 60 वर्ष है, साक्षी संख्या 1, जो अपीलकर्ता की पत्नी है, अकेली रह गई है और अपीलकर्ता आठ वर्ष से अधिक कारावास भुगत चुका है, हम मानते हैं कि विचारण न्यायालय के फैसले के अनुसार और उच्च न्यायालय द्वारा पुष्टि किए गए जुर्माने और न्यूनता सजा, के अतिरिक्त पहले से भुगती गई सजा, पर्याप्त सजा होगी। अपील को आंशिक रूप से मंजूर किया जाता है, जिसमें आरोप और अपीलकर्ता पर लगाई गई सजा में ऊपर बताए गए बदलाव किए गए हैं।"

35. माननीय सर्वोच्च न्यायालय के उपरोक्त निर्णयों के आलोक में, अब हम इस बात पर विचार करेंगे कि क्या आरोपी-अपीलकर्ता के विरुद्ध मामला आईपीसी की धारा 302 या धारा 304 के दायरे में आता है।

36. पीडब्ल्यू 1 रोहित कुमार, जो मृतक का चचेरा भाई है, ने अपने बयान में कहा है कि मृतक और आरोपी के बीच मादक पदार्थों के सेवन को लेकर हमेशा झगड़ा होता रहता था। घटना वाले दिन, अपीलकर्ता के घर के अंदर से चीखें सुनकर, जब वह जुगुल किशोर, ललता प्रसाद और आसपास के कई अन्य लोगों के साथ कमरे में गया, तो उसने देखा कि आरोपी अपनी पत्नी की गर्दन पर हमला कर रहा था। उन्हें देखकर आरोपी-अपीलकर्ता भागने में सफल रहा। पीडब्ल्यू 1, रोहित कुमार ने जिरह में बताया कि आरोपी-अपीलकर्ता को गांजा पीने की आदत थी, यह बात उन्हें आरोपी-अपीलकर्ता के माता-पिता ने बताई थी और उन्होंने अपीलकर्ता को गांजा पीते हुए भी देखा था। उन्होंने आगे बयान दिया कि घटना के समय कमरे में अपीलकर्ता और मृतक के अलावा कोई और मौजूद नहीं था। पीडब्ल्यू 1 के बयान के बाद के हिस्से से पता चलता है कि अपीलकर्ता के पास और अधिक चोटें पहुंचाने का पूरा मौका था, लेकिन उसने कोई अनुचित लाभ नहीं उठाया या क्रूरतापूर्ण व्यवहार नहीं किया।

37. पीडब्ल्यू 2, जुगुल किशोर ने अपने मुख्य बयान में कहा कि घटना वाले दिन, अपीलकर्ता के घर से शोर सुनकर जब वह रोहित और ललता प्रसाद के साथ घर के अंदर गए, तो उन्होंने आरोपी को अपनी पत्नी

अस्वीकरण:- अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



(मृतक) के चेहरे पर हंसिया से वार करते देखा। 18.05.2016 को हुई जिरह में पीडब्ल्यू 2 ने कहा कि चूंकि आरोपी की आदतें अच्छी नहीं थीं, उसके मामा और परिवार के अन्य सदस्यों ने आरोपी को गाँव बुलाया ताकि वह उसकी आदतें सुधार सके। आरोपी और उसकी मृतक पत्नी के बीच मादक पदार्थों के सेवन को लेकर हमेशा विवाद रहता था। अपीलकर्ता शराब और गांजा का सेवन करता था।

38. पीडब्लू-3, ललता प्रसाद ने अपने बयान में कहा है कि 22.07.2014 को रात 8:00-8:30 बजे वह सीता राम की दुकान पर खड़ा था। मृतक की चीखें सुनकर जब वह जुगुल, रोहित और आसपास के अन्य लोगों के साथ अपीलकर्ता के घर गया, तो उसने अपीलकर्ता को हंसिया से मृतक के चेहरे और गर्दन पर वार करते देखा। 21.06.2016 को हुई जिरह में उसने बयान दिया कि आरोपी घटना से 5-6 महीने पहले से गाँव में रह रहा था। वह नशे में धुत होकर घूमता था और गांजा पीता था। आरोपी-अपीलकर्ता मादक पदार्थ का सेवन करने के बाद अपनी पत्नी को पीटता था।

39. पीडब्लू-1 रोहित कुमार, पीडब्लू-2 जुगुल किशोर और पीडब्लू-3 ललता प्रसाद के साक्ष्यों को संयुक्त रूप से पढ़ने से यह स्पष्ट है कि अपीलकर्ता मादक पदार्थों का सेवन करने का आदी था और विचाराधीन घटना मादक पदार्थों के सेवन को लेकर हुए एक मामूली विवाद के कारण घटी। यह घटना अचानक हुए झगड़े का परिणाम थी, इसमें कोई पूर्व नियोजित योजना नहीं थी, यह कृत्य आवेश में आकर किया गया था और हमलावर ने किसी प्रकार का अनुचित लाभ नहीं उठाया था या क्रूरतापूर्ण तरीके से कार्य नहीं किया था। घटना का कोई उद्देश्य भी नहीं था।

40. हमारी राय में, इन सभी परिस्थितियों के संचयी प्रभाव से अपीलकर्ताओं को धारा 300 आईपीसी के अपवाद 4 का लाभ मिलना चाहिए।

41. माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा प्रतिपादित उपरोक्त कानूनी प्रस्ताव और मृतक को लगी चोटों की प्रकृति तथा ऊपर वर्णित परिस्थितियों को देखते हुए, यह निष्कर्ष निर्विवाद है कि मृतक की मृत्यु आरोपी-अपीलकर्ता के ऐसे कृत्यों के कारण हुई थी जो जानबूझकर ऐसी शारीरिक चोट पहुँचाने के इरादे से किए गए थे जिससे मृत्यु होने की संभावना हो। अतः, यह अपराध धारा 302 आईपीसी के बजाय धारा 304 भाग-I के अंतर्गत आता है।

42. उपरोक्त परिप्रेक्ष्य को देखते हुए, धारा 302 आईपीसी के अंतर्गत अपीलकर्ता की दोषसिद्धि को बरकरार नहीं रखा जा सकता। यह न्यायालय आजीवन कारावास का समर्थन करने में अनिच्छुक है। तदनुसार, धारा 302 आईपीसी के अंतर्गत अपीलकर्ता की दोषसिद्धि को रद्द किया जाता है, और इसके बजाय उसे धारा 304 भाग-I आईपीसी के अंतर्गत दोषी ठहराया जाता है तथा दस वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई जाती है। अपीलकर्ता 23.07.2014 से जेल में है। यदि वह किसी अन्य मामले में वांछित न हो, तो उसे तत्काल रिहा कर दिया जाएगा, बशर्ते उसने दस वर्ष की संशोधित सजा पूरी कर ली हो।

43. परिणामस्वरूप, अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश, न्यायालय संख्या 4, झांसी द्वारा दिनांक 08.06.2022 को पारित विवादित निर्णय और आदेश में उपरोक्त संशोधन के साथ अपील आंशिक रूप से स्वीकार की जाती है।

44. कार्यालय को निर्देश दिया जाता है कि अनुपालन के लिए इस आदेश की एक प्रति सहित निचली अदालत के अभिलेख संबंधित न्यायालय को भेजा जाए।

45. श्री हरीश चंद्र तिवारी, माननीय न्याय मित्र को इस अपील के निर्णय में न्यायालय को दी गई सहायता के लिए 15,000/- रुपये (पंद्रह हजार रुपये) मात्र का भुगतान किया जाएगा।

अस्वीकरण:- अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



(न्यायमूर्ति श्री देवेन्द्र सिंह-I,)(न्यायमूर्ति श्री चंद्र धारी सिंह,)

फरवरी 03, 2026

Translated version. Not for legal use.

अस्वीकरण:- अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।